ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):79-86

"डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह के काव्यों में सांस्कृतिक विवेचना"

देवेन्द्र कुमार सिंह एवं हिमांशु शेखर सिंह
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
जमुनीपुर कोटवा प्रयागराज उ०प्र०
Email: devendrasankalp@gmail.com

Received: 01.10.2024 Revised:02.02.2025 Accepted: 20.02.2025

सारांश

प्रसिद्ध कवि, लेखक, समीक्षक, साहित्य सेवी एवं भारत-भारती पुरस्कार से सम्मानित डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह की भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म में अगाध आस्था थी। वे कस्मेडा राजवंश सीतापुर सिधोली से सम्बन्धित होने के कारण कुँवर कहलाये। पहले आप कवि 'किंकर नाम से काव्य रचना करते थे परन्तु बाद में अपने असली नाम से कविता लिखनी आरम्भ कर दी। आपने नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए० किया। डॉ. साहब को 9 भाषाओं का ज्ञान था । इन्होंने 'मेघमाला, शम्पा, बा और बापू, प्रतिपदा, 'अपराजिता, विजया, ऋतम्बरा काव्य संग्रह रामदूत, 'संकटमोचन, ऋषभदेव महाकाव्य वृन्दावन शम्बूक खण्डकाव्य जनकवि, जगनिक, 'तुलसीदास, नरोत्तमदास, स्वातंत्र्य की जननी, गोविन्द हुलास नाटक, कवि 'कुलगुरु, पाँच एकांकी, आचार्य चाणक्य, और अग्निपरीक्षा एकांकी संग्रह, हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमध की मीमांसा', 'नाटककार भारतेन्दु और उनका युग, हिन्दी नाट्य साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास', मौलिक कृतियों हिन्दी साहित्य को दी। इसके अतिरिक्त इन्होंने कई साहित्यिक कृतियों का सम्पादन भी किया है।

कूट शब्द- *ऋतम्बरा, ऋषभदेव, शम्बूक, हुलास, अग्निपरीक्षा, समीक्षात्मक, मीमांसा, कुलगुरु, 'कनकधारा स्तोत्र', उज्जवल, अक्षय रस, कनकधारा, प्रभुपाद कृत, मेटाफिजिक्स, तत्पश्चात्, मणिमय, जापरत, राज्याभिषेक, धनमाप्नोति, शंबूक, ऐश्वर्य, पतिव्रता, रुद्राभिषेक, पापोंकुशा, जीवनपर्यन्त, पितामह, समागम।*

परिचय -

कुंवर साहब का जन्म शरद् पूर्णिमा संवत् 1967 तदनुसार 18 अक्टूबर, सन् 1910 को सीतापुर जिले की तहसील सिधौली के ग्राम पैसिया जो कि मिनी बैसवारे के नाम से जाना जाता है के एक प्रतिष्ठित बैस-क्षत्रिय परिवार में हुआ था जो इस बात का प्रमाण है कि कुंवर साहब के पूर्वज बैसवारा (उन्नाव) से आकर यहाँ बसे थे। इनका अमृतत्व पापोंकुशा एकादशी सं0 2054 12 अक्टूबर 1997 में हुआ था। कुंवर साहब का परिवार साहित्यिक, धार्मिक तथा सांस्कृति

गतिविधियों का केन्द्र था। इनके पितामह ठाकुर श्री अवध बख्श सिंह के दोनों भाई ठाकुर अनिरुद्ध सिंह तथा ठाकुर दरबारी सिंह अच्छे कवि थे। इसलिए ठाकुर अवध बख्शसिंह के दरबार में उच्चकोटि के कवियों, विद्वतजनों तथा साधु-संतों का प्रायः समागम हुआ करता था। इनके पिता ठाकुर गजराज सिंह थे तथा माता श्रीमती गार्गी देवी उच्चकोटि की धर्मपरायण महिला थीं। वे नित्यप्रति रामचरितमानस का पारायण करती थी तथा बिना पारायण किये वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करती थीं। परिवार की साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक गतिविधियों की अमिट छाप कुँवर साहब के व्यक्तित्व में बचपन से लेकर जीवनपर्यन्त देखी जा सकती है। माता के प्रभाव के कारण उनका व्यक्तित्व भक्ति भावना से परिपूर्ण रहा है। परिवार की साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा अपने पितामह ठाकुर अनिरूद्ध सिंह तथा ठाकुर दरबारी सिंह से प्रभावित होकर उन्होंने कवि जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिया था।[1]

कुंवर साहब की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। इसके पश्चात उन्हें पैसिया गाँव के समीप स्थित प्राइमरी पाठशाला ग्राम बाड़ी में सीधे कक्षा 4 में प्रवेश दिलाया गया। आपने वही के मिडिल स्कूल से कक्षा सात की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात उन्होंने राजकीय इंटर कॉलेज सीतापुर में प्रवेश लिया और इसी इंटर कॉलेज से उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इंटरमीडिएट की परीक्षा कान्यकुब्ज इंटर कालेज से उत्तीर्ण की। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से स्नातक की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ अर्जित की। उन्हें यह स्वर्ण पदक अंग्रेजी साहित्य में विश्वविद्यालय के समस्त छात्रों में सर्वाधिक अंक अर्जित करने के कारण प्रदान किया गया था।

साहित्य समीक्षा -

डॉ. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह ने कतिपय शोध कृतियों का प्रणयन भी किया है यथा "दौलत बाग विलास', काव्य प्रभाकर, 'किम्बा रुक्मिणी हरण, अक्षयरस, शोध साधना । इसके अतिरिक्त इन्होंने कतिपय कास्य ग्रन्थों का अनुवाद किया है यथा-रूप गोस्वामी कृत 'उज्ज्वल नीलमणि, यजुर्वेद, सामवेद, चरपट पंजरिका स्तोत्रम 'कनकधारा स्तोत्र', शिव ताण्डव स्तोत्र, ब्रह्मसहिता श्री प्रभुपादकृत श्रीमद्भागवत् ऐन आल्ट्रालाइन आफ मेटाफिजिक्स, ऐन प्रेज आफ द महाजनाज एण्ड अदर पोयम्स। इस प्रकार डॉ. सिंह ने हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में मौलिक सृजन कार्य किया, शोधग्रन्थ लिखे तथा कई महत्वपूर्ण अनूदित ग्रन्थ हिन्दी साहित्य को दिये। इस प्रकार उनका साहित्य विशद एवं महत्वपूर्ण है।

तत्पश्चात् संस्कृति की अवधारणा तथ सांस्कृतिक अध्ययन के आयाम विवेचित किये गये हैं। इसके अन्तर्गत्त पाश्चात्य एवं पौर्वात्य विद्वानों की संस्कृति के सम्बन्ध में परिभाषायें दी गयी है तथा संस्कृति के विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया है जैसे सदाचार और उदारता, जीवन का आदर्श या लक्ष्य, पशुता से ऊँचा उठना सामाजिक सद्गुण, कर्तव्य पालन और परोपकार, मनुष्य की पूर्णता और लोक सेवा, मनुष्य जाति का कल्याण आदि। इसी क्रम में संस्कृति और सभ्यता में

अंतर स्पष्ट किया गया है- "धर्मस्य तत्व निहितं गुहायां 'महाजनों' येन गत: से पंथ:।"[2]

इसके आगे डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह विरचित उनके प्रबंध काम्यों में प्राप्त सांस्कृतिक पक्ष की विवेचना की गयी है। संस्कृति के उपर्युक्त तत्यों को आधार पर उनके रामदूत नामक महाकाव्य का सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार प्राचीन काल से ये परम्परा बली आ रही है यदि कोई योद्धा अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध क्षेत्र में जाता है तो वह अपने इष्टदेव की पूजा अर्चना कर विजय का आशीर्वाद प्राप्त करता है। रामदूत में भी श्रीराम ने शिव और शक्ति की आराधना की। मेघनाद ने अपनी इष्ट देवी की पूजा-आराधना की थी।

जब श्री राम ने समुद्र पर एक दिव्य ज्योतिर्लिंग स्थापित करने का निश्चय किया तो उन्होंने वानरराज सुग्रीव से ऋषियों को बुलाने तथा शिव पूजन की तैयारी करने के लिए कहा। सुग्रीव ने अपने सैनिकों को प्रत्येक दिशा में वांस करने वाले ऋषियों-मुनियों को सादर ले आने के लिए कहा। ऋषियों-महर्षियों के आगमन पर श्रीराम ने उनका स्वागत किया और पूजा सम्पन्न करने की प्रार्थना की। महर्षि अगत्स्य ने धरती शुद्ध की। मार्कण्डेय ऋषि ने महारुद्र के विग्रह की स्थापना की। शिव की अर्चना के लिए औषधियों, मणियों लीहादि उपकरण एकत्र किये गये। पूजा-अर्चना में सर्वप्रथम गणेश की वंदना की गयी उसके पश्चात विधि-विधान से श्रीराम ने ध्यान लगाकर कुण्डलिनी जाग्रत की। उनके नेत्र भावशून्य हो गये और मन संकल्प-विकल्प विहीन हो गया तब उन्हें अपने अन्तर में मणिमय शिखरों से शोमित एवं लताओं से आच्छादित अलौकिक कैलाश भवन दिखाई दिया। अचानक उनका ध्यान टूटा और अपने सम्मुख सैन्धव, सिक्ता और मुक्ताओं के चूर्ण से निर्मित ज्योतिर्लिंग उन्होंने प्रकट रूप में देखा। मुनियों ने राम के हाथों विधि पूर्वक रुद्राभिषेक कराया ।सभी तीर्थों के जल से ज्यातिर्लिंग का जलाभिषेक कराया गया। श्रीराम ने प्रार्थना की कि आप परब्रह्म है. आप भारतीय प्रजा को युगों-युगों तक एक सूत्र में बाँधे ।

रामदूत समीक्षा -

रामदूत महाकाव्य में दार्शनिक तत्वों की मीमांसा की गयी है। डॉ. सिंह ने लिखा है कि इस संसार में कोई भी वस्तु शाश्वत नहीं है। धर्म ही सत्य और सनातन है। सभी सत्ताओं की सत्ता है और चरम चेतना है। यही धर्म जीवों की रक्षा करता है और काल की कूर गति को अवरुद्ध कर देता है। वास्तविक विजय के लिए इन्द्रिय निग्रह अनिवार्य है। श्री राम सर्वशक्तिमान हैं। हनुमान रावण को समझाते हैं कि राम पूर्ण पुरुष हैं। वे जड़ और चेतन दोनों को चेतना की सीमा में ले जाना चाहते हैं। वे संसार के सभी मानवों को दिव्य प्रमा से प्रकाशित करना चाहते हैं। ये भूमि का भार कम करने के लिए धरती पर अवतरित हुए हैं ,

" थे यज्ञ कर रहे कहीं निशाचर हो संयत।

थे मंत्र जापरत कहीं, कहीं स्वाध्याय -निरत।।"[3]

रामदूत के प्रणयन का साहित्यिक उद्देश्य यह है कि इसके पठन-पाठन से मनुष्य का विकास हो और उसकी उन्नति में सहायक हो। साथ ही से ऊँचे आदर्शों पर ले जाने वाला है। रामदूत में हनुमान का चरित्र इतना व्यापक उत्कृष्ट और प्रेरणाप्रद है कि उनके ऊपर लिखा यह साहित्य स्वयं ही संस्कृति की कसौटी पर खरा उतरता है। इसके अतिरिक्त श्रीराम का चरित्र भी इस काव्य का आधार है। ये दोनों ही इस साहित्यिक कृति के नायक हैं। इनका चरित्र स्वयं संस्कृति एवं सभ्यता से परिपूर्ण आचरण का रत्नाकर है। इसका जो भी अवगाहन करेगा वह रीता नहीं रहेगा। रामदूत' में चित्रित सीता का चरित्र ही नारी का एक आदर्श चरित्र है जो अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जीवन होम करने के लिए भी तत्पर है।

संस्कृति का एक अंग है कला। कला यह है जिससे मनुष्य को सुख मिले उसके ज्ञान की वृद्धि हो तथा जिसमें उसे सौन्दर्य का अनुभव हो। रामदूत' में वर्णित सौन्दर्य भावों की उच्चता के कारण हृदय को आनन्दित करता है। 'रामदूत में कला का वर्णन अधिक नहीं हुआ है और जहाँ कहीं भी हुआ है, अधिकांशतः स्थापत्य कला से सम्बन्धित है,

रहन-सहन सामाजिक जीवन का अंग है। इसके अन्तर्गत आचार-विचार, जीवन-यापन की रीति. वेशभूषा, रीति-रिवाज, लोकप्रथा आदि समाहित होते हैं।

रामदूत महाकाव्य में इन सभी तत्वों का चित्रण किया गया है। इस काव्यकृति में सन्दर्भ के अनुसार रावण एवं लंकापुरी के वैभवशाली रहन-सहन का सुन्दर वर्णन किया गया है। गायिकायें एवं नर्तकियों गाते-गाते और नाचते-नाचते थककर बेसुध पड़ी है उनके वस्त्र अस्त-व्यस्त हैं जिनका उन्हें होश नहीं है।

"धर्म ही घरा का श्री अनंत, सौभाग्य परम है

प्राणि मात्र के मंगल का आधार चरम।"[4]

संकटमोचन महाकाव्य में डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने रामदूत महाकाव्य की कथावस्तु से आगे की विषय वस्तु उठाई है। रामदूत महाकाव्य का समापन हनुमान जी द्वारा लंका दहन से लौटने के पश्चात हो जाता है।संकटमोचन में राम-रावण युद्ध. रावण की पराजय और मृत्यु विभीषण को लंका अधिपति बनाना, लक्ष्मण और जानकी समेत पुष्पक यान से राम का अयोध्या लौटना, राम का राज्याभिषेक, लक्ष्मण को युवराज का पद प्रदान करना, हनुमान का तपलीन शंबूक के पास जाना, उनकी कठोर तपस्या का कारण समझना, हनुमान का शंबूक को राम को ही साक्षात ब्रह्म बताना, राम का शम्बूक के पास पहुँचना और दर्शन देना शंबूक की हीनावस्था दूर करने के लिए हनुमान का कागभुशुद्धि के पास ले जाना और उनकी हीनावस्था दूर करना तथा शंबूक का रामभक्ति में निरत हो जाना वर्णित है। 'संकटमोचन' महाकाव्य के सांस्कृतिक अनुशीलन के लिए हम सबसे पहले इसमें अनुस्यूत धर्म भावना का अध्ययन करेंगे। इस महाकाव्य के मुख्य नायक 'श्री हनुमान है। जिनके व्यक्तित्व के दो प्रमुख गुण हैं शौर्य एवं

धर्मानुसरण करते हुए अपने इष्टदेव राम के प्रति असीम मक्ति। हनुमान जी का सम्पूर्ण जीवन धर्म की गाथा है। उन्होंने विषम से विषम परिस्थितियों में भी धर्म का साथ नहीं छोड़ा। राम-रावण का युद्ध भी पृथ्वी पर धर्म की पुनः स्थापना के लिए हुआ और इस युद्ध में हनुमान पग-पग पर राम के साथ रहे। हनुमान जी दिन में शत्रुओं से युद्ध करते उनका संहार करते और रात्रि में युद्धभूमि में घायल शत्रुओं को पानी पिलाते और ये सान्त्वना देते कि राम के हाथों मारे जाने पर उनका उद्धार होगा। प्राणिमात्र की सेवा करना एक धर्म है। ये धर्माचरण करने पर अहंकार समाप्त हो जाता है और ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग खुल जाता है,

"अपरिच्छिन्न काल से भी वह गुणातीत अद्वय है. अनाद्यन्त वह आदिभूत है निविशेष निरवधि है....उस भौतिक निसर्ग के तथ्यों की सीमा कर अवगत, आप सुन सकेंगे सत्ता के परम सत्य का स्पन्दन, होकर परम सत्य के चेतन स्पर्श से वंचित।"[5]

भगवान भक्त की इच्छा पूर्ति के लिए तत्पर रहते हैं इसके लिए भक्त की भक्ति भावना ऐसी होनी चाहिए कि ईश्वर उसके प्रेमपाश में बंधकर उसकी इच्छापूर्ति के लिए बाध्य हो जाए। शंबूक की भक्ति भी इसी कोटि की थी। उसे सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा थी इस इच्छा की पूर्ति के लिए राम ने आकाश से धरती पर यान उतारा और उन्हें सशरीर यान में बैठकर स्वर्ग जाने के लिए कहा किन्तु सच्चे भक्त के लिए अपने इष्टदेव के दर्शन से बढ़कर अन्य कोई स्वर्गिक सुख और परमानन्द नहीं होता इसलिए शंबूक ने अपनी पूर्व निश्चित इच्छा त्याग दी और अपना शेष जीवन इसी धरती पर ईश आराधना में बिता दिया। ईश्वर की दृष्टि में सभी भक्त समान होते हैं। वे भक्तों में भेदभाव नहीं रखते इसलिए घुच प्रहलाद जैसे राजकुमारों से लेकर गणिका, गिद्ध, अजामिल, गजराज, कागमुशुजि जैसे प्राणियों का एक समान उद्धार किया।

संकटमोचन समीक्षा -

संकटमोचन में भी शंबूक जो एक निम्न जाति का था. श्रीराम ने वैसा ही आदर और सम्मान दिया जैसे अपने अन्य भक्तों को देते हैं। यज्ञ, हवन इत्यादि धार्मिक अनुष्ठान है ये अनुष्ठान राम ने भी अनेक बार सम्पन्न किये है। संकटमोचन' में भी कवि ने रामेश्वरम में शिव की स्थापना एवं राज्याभिषेक के पूर्व अग्निहोत्र यज्ञादि सम्पन्न किये थे। इस प्रकार संकटमोचन में धर्माचरण स्थान-स्थान पर परिलक्षित होता है। दर्शन संस्कृति का एक अंग है। डॉ कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने संकटमोचन' के अन्त के कई सर्गों में कई स्थलों पर सुन्दर दार्शनिक विवेचना प्रस्तुत की है। उन्होंने जीव और ईश्वर के विषय में यह बताया है कि ये संसार और सांसारिक जीव सभी अंश हैं ईश्वर के। ईश्वर ही सबके शरण्य है यह संसार इसका रूप आकृति सब मिथ्या है। ईश्वर की सत्यता ग्रहण करके ही यह दूसरा सत्य बना है। वस्तुतः यह संसार ईश्वर की ही परिकल्पना का परिणाम है। इस संसार में सर्वत्र ईश्वर व्याप्त है और इसमें उसका ही रूप विद्यमान है। डॉ. सिंह ने एक स्थल पर लिखा है कि जब आदि शक्ति प्रभु का संकेत प्राप्त करती है तो वह करोड़ों संसारों की रचना कर देती है। कागभुशुद्धि के माध्यम से कवि ने ये कहलाया है कि आकाश के समान जो परम प्रकाश

सर्वत्र छाया है उसे ही त्रऋषिजन ब्रह्मतत्व कहते हैं। उसकी चेतना अपने अंग-अंग में परिप्लावित करें तो मन में उस रस की मधुर तरंग निरन्तर उठती है। श्री राम स्वयं परमानन्द स्वरुप ब्रहा है, वे ही शाश्वत हैं। यह समस्त सत्ता उनकी ही है। वे सीमाओं से परे हैं, उन तक मन की गति पहुँच नहीं सकती है।

" नागो यक्षा गधों की वधुएं यौवनशाली, रूपवती जो पड़ी दिखाई जग में लंकेश्वर को ।अपहृत कर बल से वे लाए अपने अन्तः पुर में, मृगपति के बंधन में मृगियों के दल सी संत्रस्ता । माता-पिता, बंधु-पति, सुत की स्मृति में आकुल विहृवल, दुःख शोक संविम्न भग्नउर कन्दन वे करती थीं।"[6]

संस्कृति के अन्तर्गत विज्ञान भी समाविष्ट है। 'संकटमोचन में वर्णित स्थितियों के अनुसार श्री राम के युग में विज्ञान उन्नत अवस्था में था। युद्ध में प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र बाण आदि इसके प्रमाण हैं। साथ ही पुष्पक विमान से राम-लक्ष्मण सीता का अयोध्या में लौटना विकसित विज्ञान का परिचायक है। संकटमोचन में इस यान के सम्बन्ध में कवि ने जो विवरण दिया है उनके अनुसार इस विमान में कई लोगों के बैठने के लिए आसन बने थे उसके भीतर कई गुप्त कक्ष थे जो यात्रियों के आराम करने के लिए बने थे। यान का सम्पूर्ण भाग मोती मणियों से सज्जित था। वह यान संकेत पाते ही उड़ने लगता और उसमें बैठे यात्रियों को उनके गन्तव्य स्थान पर पहुंचा देता। साहित्य संस्कृति का एक अविभाज्य अंग है। कवि ने संकटमोचन महाकाव्य में पौराणिक महापुरुषों को नायक रूप में स्थान दिया है। श्रीराम और हनुमान इस महाकाव्य के प्रमुख पात्र हैं। इनका चरित्र स्वयमेव एक महान साहित्य है जिसे ग्रहण कर कोई भी अपने व्यक्तित्व का सम्यक विकास कर सकता है। कवि ने इस महाकाव्य के माध्यम से लोगों में सत्य के लिए संघर्ष करने की भावना जागृत की है तथा परोपकार के लिए समर्पित होने की उदात्त भावना की प्रेरणा दी है और इस महाकाव्य में राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य और प्रजा का राजा के प्रति कर्तव्य धन का समान रूप से वितरण, जन कल्याण, दान की प्रवृत्ति, भ्रातृप्रेम, त्याग, दीन हीनों को अपनाना, समरसता और समानता का व्यवहार, समान अधिकार जैसे अनेक उच्चस्तरीय मानवीय गुण का सन्निवेश इस महाकाव्य में किया गया है,

"मेरा बल वैभव नाथ! आपका खुद्र दान, प्रभु सूत्रधार मेरे, यह संतत मुझे ध्यान"[7]

संस्कृति का एक अंग लोगों का रहन-सहन भी है। संकटमोचन के अन्त के अध्यायों में उस समय के लोगों के रहन-सहन की जानकारी प्राप्त होती है। राक्षसी समाज पुरुष प्रधान था पुरुष का अपनी अर्द्धांगिनी पर पूर्ण वर्चस्व था। जब मेघनाद अपनी माया से सीता के वध की बात रावण से कहता है तो रावण को उस पर विश्वास नहीं होता किन्तु सीता वध की बात सुनकर मंदोदरी तथा अन्य रानियों के मुखपर विषाद छा जाता है किन्तु रावण प्रसन्न होकर उन सभी को तुरन्त अन्तःपुर में जाने का आदेश देता है।

राक्षस जाति स्वयं को शक्तिशाली बनाने और युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए अपनी कुल देवी की आराधना करती थी। मेघनाद भी अपनी कुलदेवी निकुम्भिला की आराधना करता है ताकि युद्ध में उसकी विजय हो। उस समय राज्याभिषेक की परम्परा थी राम का राज्याभिषेक तत्कालीन प्रचलित विधि-विधान के साथ किया गया था। राम और सीता एक साथ सिंहासनासीन होते हैं। उनके शीश पर स्वर्ण निर्मित छत्र तना हुआ था वह छत्र भरत लिये हुए उनके पीछे चल रहे थे। भरत तथ शत्रुघ्न मोरछल झल रहे थे । हनुमान जी आगे-आगे पॉवडे बिछाते चल रहे थे। देश विदेश से आये राजा उन्हें उपहार भेट करते है। इन्द्र ने ऐरावत, अग्नि ने त्रयकालिक यज्ञों का फल और कुबेर ने निधियों भेंट कीं। यमराज ने न्याय-धर्म का राजदण्ड भेंट किया। वरुण ने इच्छित फल प्रदान करने वाली धन माला अर्पित की। वायुदेव ने सेनाओं को अतुलित गति प्रदान की। गंधर्वराज ने अनुपम अश्वय प्रदान किये तथा कश्मीरराज ने दिव्य कस्तूरी और केसर उपहार स्वरूप भेंट किये।

संकटमोचन महाकाव्य में तत्कालीन प्रचलित प्रथाओं का वर्णन किया गया है मेघनाद के मारे जाने पर उसकी पत्नी सुलोचना पति के साथ चिता में सती हो जाती है। लंका में रावण का कोई उत्तराधिकारी शेष न रहने पर विभीषण को सिंहासन पर आरूढ़ किया गया। उस युग में यह लोक विश्वास प्रचलित था कि पतिव्रता स्त्री के सतीत्व में इतना ताप होता है कि उसे भंग करने वाला उस ताप से भस्म हो सकता है। सीता की सतीत्व शक्ति के कारण ही रावण उसके पास तक नहीं जा सका था । इनका तीसरा महाकाव्य है ऋषभदेव जिसके नायक हैं ऋषभदेव मनु के वंशज पिता नाभि एवं माता मेरुदेवी के पुत्र थे। ये जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर स्वीकार किये गये हैं,

"जो परम चरम ऐश्वर्य प्राप्त, उनको था उससे हो विरक्त । वे पूर्ण काम थे और सतत्, रहते थे हरि अर्चना निरत ।"[8]

इस महाकाव्य को 9 सर्गों में विभाजित किया गया है चूंकि यह ग्रन्ध जैन धर्म से सम्बन्धित है इसलिए इसमें प्रकृत्या धार्मिक भावना का बाहुल्य है। इस सम्बन्ध में डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने यह बताया है कि धर्म एक ऐसा चरम और अक्षय स्त्रोत है जिससे सच्चा और शाश्वत आनन्द प्राप्त होता है। ऐन्द्रिक सुख क्षणिक होता है किन्तु धर्म के पालन से जो सुख प्राप्त होता है वह शाश्वत होता है। धर्म एक कल्पवृक्ष के समान है जो मनुष्य की कामनाओं की पूर्ति करता है। एक श्लोक में कहा गया है-

"विद्या ददाति विनयम् विनयाद् याति पात्रताम् ।

पात्रत्वम् धनमाप्नोति धनात् धर्मः ततो सुखम् ।।"[9]

अर्थात विद्या से विनय आती है विनय से पात्रता आती है। पात्रता से धन प्राप्त होता है और धन प्राप्त होने के बाद धर्म की प्राप्ति होती है और धर्म का आना ही सुख का पाना है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह एक भक्त हृदय, सहृदय एवं

संवेदनशील रचनाकार हैं जिन्होंने प्राचीन साहित्य का गहन अध्ययन किया था और उन्होंने 'रामदूत', 'संकटमोचन', 'ऋषभदेव, शंबूक, वृन्दावन जैसे प्रबन्ध काव्यों का सूजन किया है जिनमें प्रबन्ध काव्य के लगभग सभी तत्वों का सम्यक निर्वाह हुआ है। उनकी भाषा परिष्कृत एवं संस्कृत निष्ठ है। उन्हें आलंकारिकता के प्रति व्यामोह नहीं था। स्वाभाविक रूप से सहजतया अलंकार की योजना हो गयी हो तो कहा नहीं जा सकता। डॉ. सिंह के गद्य और काव्य में समान गति, मति, रति और पैठ थी। उन्होंने कई गद्य कृतियों का भी प्रणयन किया है। जैसे नाटककार भारतेन्दु और उनका युग. 'जन कवि जगनिक, तुलसीदास नाटक,'कविवर नरोत्तम दास (लघु नाटक) स्वातन्त्र्य की जननी, कवि कुल गुरु', पाँच एकांकी, आचार्य चाणक्य, अग्नि परीक्षा आदि गद्य कृतियाँ उनकी गद्य सृजन क्षमता की परिचायक हैं। डॉ. सिंह रामभक्त कवि हैं तथा हनुमान जी पर उनकी विशेष भक्ति है। इसीलिए उन पर उन्होंने दो महाकाव्य रामदूत एवं संकटमोचन सृजित किये हैं। एक श्रेष्ठ साहित्यकार के साथ ही वे एक अच्छे इंसान भी थे। उनके साहित्यिक प्रदेय से हिन्दी वाङमय समृद्ध हुआ। उनकी इसी विशिष्ट साहित्य साधना के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उन्हें 'भारत भारती" जैसे उच्चस्तरीय सम्मान से समलंकृत किया था।

संदर्भ सूची -

1. सं.शिव मोहन सिंह (कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह), ग्रंथावली महाकाव्य, प्रथम खंड,पृ.- भूमिका
2. वेदव्यास कृत, महाभारत, पृ- 263 (3/45)
3. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, रामदूत, पृ.- 12
4. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, रामदूत,पृ.-166
5. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, रामदूत,पृ.-85
6. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, रामदूत,पृ.-24
7. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, संकटमोचन,पृ.-111
8. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह, ऋषभदेव,पृ.-15
9. भर्तृहरि, नीतिशतकम्, पृ- 47

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.